International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 19-06-2019; Accepted: 22-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 37-38

मराठी रंगभूमीपर पश्चिमी रंगभूमी का असरः एक अध्ययन

डॉ. संजय पाटील
सहा. प्राध्यापक, नाटयशास्त्र विभाग, के.एस.के. महाविद्यालय, बीड, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना

मराठी रंगभूमीपर शुरु से किसी न किसी तरह का बदलाव दिखाई देता हैं. शुरु में संस्कृत रंगभूमी, लोककला का असर, बाद में षेक्सपियर के नाटकों का असर फिर इब्सेन के नाटकों का असर, तथा युध्दोत्तरकालिन युरोपियन लेखकों का जैसे बेकेट, ब्रेख्त, हॅरॉल्ड पिंटर, आर्थर मिलर, कामू, सार्त्र आदी का असर दिखाई देता हैं. आझादी के पहले भी रंगभूमी केघटकों पर असर दिखाई देता हैं. आझादी के पहले भी रंगभूमी के घटकों पर असर हुवा हैं. लेकीन आझादी के बाद बदलाव की गती जादा थी. क्यूं की समाज के विभिन्न क्षेत्रों मे गती से बदलाव आते गए. राजकीय, सामाजिक, आर्थिक बदलाव आए. इसी के साथ सांस्कृतिक बदलाव भी हुए. 1990 के बाद तो ग्लोबलायझेशन की वजह से बदलाव ने बेहद गती पकडी. जिसका असर मराठी रंगमंच पर भी पडा दिखाई पडता हैं. ग्लोबलायझेशन की प्रकिया से दुनिया एक गाव में बदल गई हैं. पश्चिमी ओर भारत की संस्कृती आपस में टकरा गई हैं. जिसका भारत की कलाओं पर भी असर हुआ. आज से नाटक इसी असर को प्रतिबिंबीत करते हैं. कोई भी रंगभूमी अपनी परंपरामे अनेको जगह से प्रेरित होकर अपने लिए कई जरुरी चिजे जाने अनजाने में ग्रहण कर लेती हैं. और दिन बदीन परितुश्ट होती हैं. रंगमंच समाज का आईना होता हैं. और समाज गतीशील होता हैं. जाहीर सी बात हैं, रंगमंच भी उसी अनुरुप में बदलती हैं. मराठी रंगमंच भी इससे अनछुई नही रही. मराठी रंगमंच भी समय समय पर बदलता रहा हैं. 1843 से लेकर आज 2019 तक कई उतार चढाव इसमें आए. संगीत नाटक उसके बाद सामाजिक समस्याओं पर आधारित नाटक, बादमें हास्य नाटकों का दौर, 1960 के बाद वास्तवदर्शी प्रायोगिक नाटकों का दौर हर इस दौरं में अभिनय से लेकर तमाम नाटयघटकों में हुई तबदीली हमारे रंगमंच को जादा मजबूत और विभिन्नता प्रदान करती रही. अंग्रेजी शिक्षा से पष्चिमी नाटयपरंपरा का परिचय हुआ तो कई चिजे उस परंपरा से हमने ले ली. अभिनय से लेकर नाटयलेखन, दिग्दर्शन, मंच सज्जा, रंगभूशा, प्रकाश योजना, संगीत योजना इन सभी नाटयअंगो पर इसका गहरा असर हुआ. देसी संस्कृत परंपरा तो पहले से इन सब के मेलजोल से बना हैं हमारा मराठी रंगमंच.

व्याख्या

प्रायोगिक. नाटक में नवनिर्माण की क्षमता है और वह कलात्मक स्तरपर हैं, जहॉ इसका स्पर्श हो रहा प्रयोगशीलता होती हैं. प्रयोगशीलता में आत्मखोज होती हैं.

प्रयोगशीलता नाटक के संदर्भ में इन घटकों में होती हैं.

1 विशय
2 आषय
3 रचना
4 संवाद
5 पात्र

प्रयोगशीलता का मतलब परंपरा को भेदकर प्रयोग में लेखक जो नयापण, उपर निर्देशित घटकों मे निर्माण करता हैं, उसे प्रयोगशीलता या प्रायोगिकता कह सकते हैं.

संशोधन का उद्येश

1 मराठी रंगमंच की परंपरा और पश्चिमी रंगमंच की परंपरा के गठन को समझना.
2 मराठी रंगमंच के भविश्य को अध्ययन के माध्यम से रोखांकित करना.
3 कुछ गैर जरुरी तत्व अगर इस परंपरा से जुटे हो तो उसको जाचना, परखना और हो सके तो उसमें सुधार के नुख्खे तयार करना.
4 पश्चिमी सभ्यता के भले बुरे प्रभाव को समझना.
5 मराठी रंगभूमी की देशी परंपराओं की खोज करना.

संशोधन की परिकल्पनाए

1 कोई भी कला अपने संपर्क में आने वाली दूसरी परंपरा से जरुरी प्रेरणाए ग्रहण करके खुद को परितुश्ट करती हैं.
2 पश्चिमी रंगमंच में मराठी रंगमंच पर गहरा असर डाला हैं.
3 परंपरा के गठण के तानेबाने को समझना, भविश्य निर्माण हेतू अच्छी शिक्षा साबीत हो सकती हैं.
4 हम अपनी परंपराओ को अधिक निर्दोश तरीके से देख समझकर उसमे सुधार कर सकते हैं.

विस्तार और सीमाएँ

1 प्रस्तुत लघुसशोधन केवल मराठी रंगमंच अथवा महाराश्ट्रीय रंगभूमी तक ही सीमित हैं.
2 प्रस्तुत लघुसंशोधन 1943 से लेकर 2019 तक की मराठी रंगभूमी सीमित हैं.
3 पश्चिमी परंपरा की कल्पनाओं का विस्तार युरोपियन और अमरिकन रंगमंच विस्तार हैं.

कार्यप्रणाली

अंग्रेजी शिक्षा के अध्ययन से भारतीय रंगभूमी का पश्चिमी रंगभूमी से परिचय हुआ. जिसका गहरा असर मराठी रंगभूमी पर पडा. केवल नाटयलेखन विधा नही अपितु अभिनय, मंचसज्जा, रंगभूशा, प्रकाश योजना, दिग्दर्शन, संगीत आदि नाटयघटक भी इस असर से अनछुए नही रह सके. 1843 में जिस वक्त विश्णूदास भावे ने मराठी रंगमंच का आगाझ किया था उस वक्त उन्होनें अपने सामने आदर्श के रुप में संस्कृत या देशी परंपराओं को रखा था. जो कला उनका प्रेरणा स्त्रोत थी. मगर जैसे जैसे मराठी रंगमंच की परंपरा आगे बढती ग्रई, कई नाटयकर्मीयोंका पश्चिमी रंगमंच से परिचय हुआ. शेक्सपियर, इब्सेन, मोलियर आदि के नाटकों का गहरा असर हुआ. जिसके परिणास्वरुप मराठी नाटकों ने स्वयं ने कई बदलाव लाए. सिनेमा का भी इस बदलाव में कुछ हद तक बदलाव जरुर आया. मराठी नाटयलेखन विधा ने अपनी मर्यादा

लांघी.पाच छ अंको का नाटक तीन अंको में बदल गया. नए अनछुए विशय नाटकों ने अपनाए. नाटकों से संगीत कमतर होते होते समाप्त हो गया. संवाद जादा सहज हुए. 1960 में इस बदलाव की प्रक्रिया में तेजी आई. मगर शुरुवात पहले से हो गई थी. आंधळयाची शाळा इसका जिता जागता उदाहरण हैं.

इसी परिप्रेक्ष्य में हम नटसम्राट, सखाराम बाईंडर, उध्वस्त धर्मशाला, महानिर्वाण आदि नाटक देख सकते हैं. दुनिया भर के नाटयआंदोलनों ने अपनी स्वयं की कुछ शैलीयॉ विकसित की. इन शैलीयों का असर मराठी रंगभूमी पर पडा दिखाई देता हैं. उदाहरण के तौर पर हम शास्त्रीय वाद, रितीवाद, प्रतिकवाद, अभिव्यक्तीवाद, मिथ्यावाद, पुराणवाद, वास्तववाद आदि शैलीयों का मराठी नाटकों पर आज भी देख सकते हैं.

इसी तरह मराठी रंगमंच के कई अन्य घटक जैसे दिग्दर्शन पर भी पश्चिमी असर देख सकते हैं. दिग्दर्शक का महत्व रंगभूमीपर बढता चला गया. विजया मेहता, जब्बार पटेल,दामू केंकरे, वामन केंद्रे, केदार शिंदे, चंद्रकात कुलकर्णी, संजय मोने आदि उदाहरण हम देख सकते हैं.

पश्चिमी रंगमंच पर कई अभिनयपंथ निर्मित हुए और उनका असर मराठी रंगभूमी के अभिनय पर दिखाई देता हैं.ग्रोटोव्हस्की का पवित्र अभिनयपंथ, स्टॅनिस्लाव्हस्की का अभिनयपथ, मेयर होल्ड का अभिनयपंथ, ब्रेख्त का अभिनयपंथ आदि का असर मराठी रंगमंच के अभिनयपंथ पर पडा हैं.

प्रकाश योजना और नेपथ्य पर जॉर्डन क्रेग और ॲडॉल्फ ॲपिया के असर से नयी दिशा मिली. जिससे रंगभूमी जादा आधुनिक हुई. जादा कलात्मक हुई. इसी तरह पार्ष्वसंगीत का मराठी नाटकों मे चलन बढा. रंगभूशा और वेषभूशा में परिवर्तन आए. कपडो कें रंग, रेशा, आकार का ध्यान रखा जाने लगा. रंगभूमी के आधुनिक साधनों से रंगभूशा जादा सहज और परिणामकारक हो गई.

निश्कर्श

- मराठी रंगभूमी बेहद लचिली हैं.
- मराठी रंगभूमी समय के साथ स्वयं मे बदलाव की क्षमता रखती हैं.
- मराठी रंगभूमी ने नाटयलेखन से लेकर अभिनय, दिग्दर्षन, नेपथ्य, संगीत, प्रकाष योजना, रंगभूशा, वेषभूशा आदि में समय के साथ बदलाव किए.
- पष्चिमी रंगमंच का जितना असर मराठी रंगमंच ने ग्रहण किया उसकी तुलना में देसी परंपराओ पर ध्यान नही दिया.
- 1960 के बाद मराठी रंगमंच सही मायने में आधुनिक हो गया.
- मराठी रंगभूमी ने पष्चिमी प्रभाव तो ग्रहण किया मगर स्वयं की कोई देषी षैली का स्कूल निर्माण नही कर पाई.

सूचनाऍं

- मराठी रंगभूमी ने स्वयं की देषी परंपराओ पर भी ध्यान देकरअपनी खुद की पहचान बनानी चाहिए.
- मराठी रंगभूमी को अपनी विभिन्नता और लचिलापण बरकरार रखना चाहिए.
- मराठी रंगभूमी को विदेष में अपनी पहचान बनानी चाहिए.

संदर्भ सूची

1 प्रा.केळकर यषवंत, नाटयनिर्मिती,1982, परिमल प्रकाषन, औरंगाबादत्र

2 श्रीमती केतकर गोदावरी, भरतमुनींचे नाटयषास्त्र, 1963, पॉप्युलर प्रकाषन, मुंबई.

3 डॉ.सरदेसाई माया, भारतीय रंगभूमीची परंपरा, 1996, स्नेहवर्धन प्रकाषन, पूणे.

4 प्रा.इंदूरकर विनोद, जागतिक नाटककार, 1994, ऋचा प्रकाषन,नागपूर.

5 डॉ.देषपांडे वि.भा., नाटयकोष, 2006, निषांत प्रकाषन, पूणे.

6 देषमुख अनंत, आधुनिक नाटयविचार, 1993, पुश्प प्रकाषन, पूणे.